गांधी तथा स्वराज ③

गांधी के अनुसार स्वराज का अर्थ है "शासन के नियन्त्रण से स्वतंत्र होने का अनवरत प्रयास"।

गांधीजी ने अपनी स्वराज्य की अवधारणा इस प्रकार स्पष्ट की है - इसका अर्थ है 'स्वशासन और स्व-निग्रह'। स्वराज सभी कालों के लिए सर्व सन्तुष्ट ध्येय का नाम है।

स्वराज के प्रमुख घटक है:

विकेन्द्रीकृत सहभागी प्रजातन्त्र - गांधीजी ने हिंद स्वराज में लिखा था कि 'वास्तविक स्वराज' सिर्फ कुछ लोगों के सत्ता प्राप्ति से ही संभव नहीं है बल्कि यह सभी नागरिकों की वह क्षमता है जिसके तहत अत्याचारी शासक का सब लोग पुरज़ोर विरोध कर सकें। अर्थात स्वराज आम लोगों को शिक्षित करके संचालित व नियंत्रित करके, की जा सकती है।

आज के समय में गांधीजी के अनुसार स्वराज का अर्थ है प्रजातंत्रि सहभागी लोकतंत्र की स्थापना, जिसमें ज्यादा से ज्यादा लोगों की सहभागिता हो। लोकतंत्र के शुरुआत गांवों से होनी चाहिए। जब तक ग्रामीणों की सहभागिता नहीं होगी, स्वराज की स्थापना असम्भव है।

2)

Scanned with CamScanner

स्वतंत्रता का अर्थ केवल अंग्रेजों से स्वतंत्रता नहीं है बल्कि देश में अनेकता में एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना है। गाँधीजी सर्वोदय की राजनीति के आध्यात्मीकरण के पक्ष में थे। राष्ट्र में शहरी और ग्रामीण में कोई भेद-भाव नहीं होना चाहिए और दोनों का एक समान विकास होना चाहिए। नैतिक स्वतंत्रता है। निम्न वर्ग को भी पूर्ण रूप से स्वतंत्रता में। भारत में जाति, धर्म, लिंग, रंग, नस्ल के आधार पर कोई भेद-भाव न हो।

गाँधीजी ने स्वराज का सकरात्मक पहलू प्रस्तुत किया जो था चतुर्मुखीय स्वराज। गाँधीजी स्वराज के चार पहलू या चार भुजाएँ बताई।

1. राजनीतिक स्वराज
2. आर्थिक स्वराज
3. सामाजिक स्वराज
4. नैतिक स्वराज

गाँधीजी के स्वराज के सकरात्मक रूप में टामस हॉब्स जॉन लॉक, रूसो तथा टी.एच ग्रीन के विचारों की झलक दिखाई देती है।

हॉब्स के समान, गाँधी का भी स्वराज से अभिप्राय एक ऐसी

Scanned with CamScanner

शासन व्यवस्था से था। उसके कार्य से ही जिन्हें किया 'अधिकृत संस्था के अधिकृत कार्यों की संज्ञा दी जा सके। लॉक के समान गाँधीजी चाहते थे कि शासन व्यवस्था लोकप्रिय, उत्तरदायी व संवेदनशील हो। रूसो व ग्रीन के समान वे चाहते थे कि सरकार लोक इच्छा को ध्यान में रखते हुए लोक कल्याण के लिए अधिक से अधिक कार्य करे। राज्य एक लोक-कल्याणकारी राज्य होना चाहिए।

अर्थात स्वराज एक ऐसी सार्वप्रभुत्व सम्पन्न शासन व्यवस्था है जो जनता द्वारा निर्वाचित व अधिकृत हो अपितु जो जीवन के सभी क्षेत्रों में बिना भेदभाव के कल्याण के लिए कार्यरत हो, ये संवेदनशील तथा प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी भी हो। जो लोगों को शासन में ज्यादा से ज्यादा सहभागिता दे। उनके स्वराज की अवधारणा, पश्चिम व पूर्व का, प्राचीन काल व समकालीन अवधारणाओं का न्यायोचित समन्वय था। ऐसे स्वराज के द्वारा ही, गांधी के विचार में 'रामराज्य' अथवा शासन मुक्त समाज के लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।

राजनीतिक स्वराज : सम्प्रभुता सम्पन्न, स्वशासित गणराज्य

Scanned with CamScanner

थोरो के समान गाँधीजी उस सरकार को सबसे अच्छी सरकार मानते थे, जो सबसे कम शासन करे अथवा जो लोगों की स्वतंत्रता में कम से कम बाधा बने। गाँधीजी एक ऐसा राज्य चाहते थे जो सर्वप्रभुत्वसम्पन्न, संघात्मक तथा धर्म निरपेक्ष हो। एक ऐसा राज्य होना चाहिए जो विदेशी शासन, सामन्तवादी शासन, सैनिक शासन तथा आक्रामकों के शासन से पूरी तरह मुक्त हो। अर्थात एक ऐसा शासन जो अब्राहम लिंकन ने कहा "जनता का जनता के द्वारा तथा जनता के लिए शासन हो। ऐसे शासन में लोगों की ज़्यादा से ज़्यादा भागीदारी हो।

गाँधी राज्य को राजनीतिक शक्ति अथवा सत्ता का ढांचा मानते थे। उनकी मान्यता थी कि सत्ता सत्ताधारी को भ्रष्ट कर देती है। जिसके पास जितना ज़्यादा सत्ता होगी उसके भ्रष्ट होने के ज़्यादा अवसर हैं। गाँधी सत्ता का विभिन्न स्तरों पर विकेन्द्रीकरण चाहते थे।

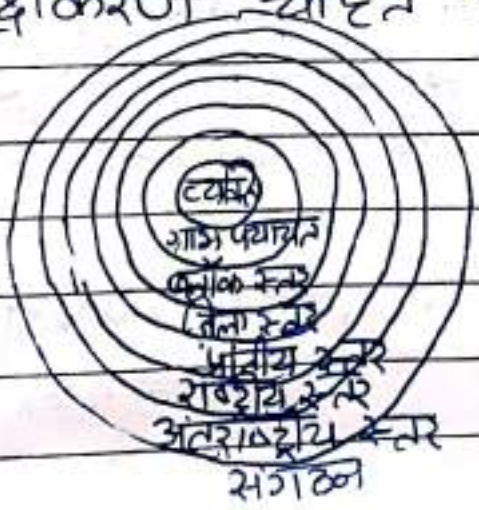


व्यक्ति X
↓
ग्राम
↓
ब्लॉक
↓
ज़िला
↓
प्रांत
↓
राष्ट्र
↓
अंतर्राष्ट्रीय संग

Scanned with CamScanner

①

गाँधीजी का मत था कि भारत लाखों गाँवों में रहता है। गाँवों में, स्थानीय स्वशासन की स्वावलम्बी इकाइयाँ होनी चाहिए ताकि ये जीवित गणतंत्र के रूप में कार्य कर सके।

गाँधी के स्वराज में सत्ता का बंटवारा गोलाकार समुद्रीय लहरों का सा होगा। सत्ता एक से दूसरे में स्थानांतरण न हो अपितु यह गोलाकार दायरों में फैलती जायेगी। गाँधी ने समुद्रीय लहरों वाली सत्ता विभाजन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

गाँधीजी ने साथ ही कि ग्रामीण गणतंत्र में सभी जातियों, धर्मों, वर्गों, जनजातियों को समान भूमिका समान स्थान एवं समान संरक्षण दिया जाना चाहिए। सामान्य हित के लिए "स्वैच्छिक काम" आवश्यक है। सभी स्वयं अपनी सहायता के लिए तत्पर रहें।

गाँधी का स्वराज भारतीय राष्ट्र तक सीमित नहीं था, यह "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना से सभी देशों को अपनी परिधि में शामिल करता था। यह स्वतंत्र राष्ट्रों के विश्व संघ में सभी राष्ट्रों की स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता सुनिश्चित करता था।

ग्राम स्वराज को व्यवहारिक रूप देने के लिए, गाँधीजी ने 1941 में रचनात्मक कार्यों की सूची बनाई -

Scanned with CamScanner

(8)

) आत्मनिर्भर गाँव अथवा सम्प्रदायिक एकता → अस्पृश्यता उन्मूलन
) नशाबंदी → खादी → ग्रामीण उद्योग
) प्रौढ़ शिक्षा → बुनियादी शिक्षा → आदिवासी
) नारी के समस्याएँ → आर्थिक समानता
) श्रमिक किसान → औद्योगिक श्रम
) कुष्ठरोगी → छात्र → स्वास्थ्य व
) स्वच्छता → प्रांतीय भाषाएँ,
) सविनय अवज्ञा के कार्यक्रम शामिल किए।

हर व्यक्ति के कल्याण पर आधारित "सर्वोदय" इस राज्य का लक्ष्य था। इसके लिए अहिंसक साधनों पर आधारित सत्याग्रह इस स्वराज प्राप्ति का साधन था।

आर्थिक स्वराज : स्वशासित स्वावलम्बन
गाँधीजी, दादाभाई नौरोजी के समान इस बात से परिचित थे कि भारत की गरीबी, दरिद्रता, बेरोज़गारी के लिए अंग्रेज प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी है। Anthony J. Parel की दृष्टि से रस्किन के विचार गाँधी के चिन्तन पर प्रभाव डालते हैं।
) चेतनापूर्ण आत्मीय प्रेरणा व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों का आधार होनी चाहिए।
) श्रम एवं पूंजी के आधार पर जोड़ा गया धन, सम्पत्ति नहीं है।
) जीवन की सम्भावित परिस्थितियाँ, हर व्यक्ति को मिलनी चाहिए चाहे वह सबसे पिछड़ा हुआ अंतिम व्यक्ति हो।

स्वदेशी - गाँधीजी के लिए स्वदेशी एक आर्थिक अवधारणा ही नहीं अपितु सत्य अवधारणा थी। स्वदेशी से अभिप्राय स्वावलंबन व देश प्रेम से था। गाँधीजी ने विदेशी वस्तुओं, संस्थाओं, शिक्षा, उद्योग कोर्ट, शैक्षिक केन्द्र, विधायिका आदि का बहिष्कार करने को कहा। गाँधीजी पश्चिमी सभ्यता के भौतिकतावादी तथा भोगवादी संस्कृति के हमेशा खिलाफ थे। आधुनिक सभ्यता ने केवल हमारे भोग-विलासिता की वस्तुओं में ही बढ़ोतरी की है। मनुष्य को ऐसी सभ्यता और उसके प्रतीकों का बहिष्कार करना चाहिए।

आर्थिक संरक्षता अथवा न्यासिता - गाँधीजी चाहते थे कि देश के संसाधनों का सभी के बीच न्यायोचित बंटवारा हो तथा देश की दौलत में सभी नागरिकों की समुचित हिस्सेदारी हो। इससे अमीर और गरीब के बीच की दूरी कम हो जाएगी। देश की धन-दौलत जो कुछ अमीरों के हाथ में सीमित थी, उसका सामान्य जनता के कल्याण के लिए बँटवारा किया जाएगा। परंतु यह सब हिंसक नहीं होगा। गाँधी को मानव प्रकृति की भिन्नता व श्रेष्ठता में आस्था थी। अमीरों से सम्पत्ति छीनी न जाए, अपितु उन्हीं के पास रहने दी जाए और वे इसे सामाजिक ट्रस्ट के समान) के लिए प्रयोग करें।

Scanned with CamScanner

इस अवधारणा में Corporate Social Responsibility का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

शारीरिक श्रम – गाँधी रस्किन की पुस्तक 'Unto this Last' में प्रकट विचारों से अत्यंत प्रभावित थे। रस्किन के समान गाँधी का भी मानना था कि व्यक्ति को अपनी रोटी, कपड़ा, मकान जैसी आधारभूत आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति अपने शारीरिक श्रम द्वारा करनी चाहिए। सबको अपनी क्षमता व रुचि के अनुसार शारीरिक श्रम का प्रयोग करना चाहिए, जिससे व्यक्ति स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बने। हर व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ भी रहेगा।

चरखा – गाँधी चाहते थे कि प्रत्येक गाँव आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी हो। गाँव-गाँव के स्थानीय स्तर पर उपलब्ध साधनों, पूंजी, श्रम, योग्यता का इस्तेमाल करे, आम व्यक्ति की आय के साधन बढ़ाना, उनका उद्देश्य था। वे खाली समय में स्वयं चरखा कातते थे। उससे बने खादी के वस्त्र ही धारण किया करते थे। लघु कुटीर उद्योग के एक प्रतीक के रूप में पश्चिमी मशीनीकरण को नकारते हुए उन्होंने चरखा अपनाया और चरखे को राष्ट्रीय आंदोलन का प्रतीक बनाया।

सामाजिक स्वराज - सामाजिक पुनरुद्धार एवं धार्मिक सहिष्णुता गांधी के स्वराज का तीसरा पहलू है। गांधीजी ने सीख दी - "जीयो और जीने दो" में सहायक हो। गांधीजी ने हर सामाजिक भेद भाव का खंडन किया जो मनुष्य को मनुष्य से दूर करता है, चाहे वे धर्म, जाति, लिंग नस्ल, रंग आदि पर आधारित हो। गांधीजी अनैतिक, अमानवीय तथा अन्यायपूर्ण वर्ण व्यवस्था का भी अंत चाहते थे।

महिलाओं को परंपरागत रूप से पुरुषों द्वारा प्रताड़ित देखकर, गांधी बहुत दुखी होते थे। गांधी की मान्यता थी कि पुरुष के समान, महिला भी मानव के रूप में ईश्वर की एक अद्भुत देन है। ईश्वर की इस कृति का मनुष्य, परिवार, समाज, सबको आदर करना चाहिए

गांधीजी इसके साथ धार्मिक एकता पर भी बल देते थे। वे मानते थे कि सभी धर्मों का सार एक ही है। ईश्वर सत्य है और सत्य सुंदर है - सत्यम शिवम सुंदरम् धर्म मानव और परमात्मा के बीच की कड़ी है। गांधी ने एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की कल्पना की जिसमें राज्य का स्वभाव - सर्वधर्म सम्भाव का हो। गांधी राजनीति के आध्यात्मीकरण और धर्मनिरपेक्षीकरण दोनों के पक्षधर थे।

Scanned with CamScanner

(12)

आत्मीय स्वराज - स्वतंत्रता के
आंतरिक बंधनों को दूर करने की
प्रक्रिया में स्वशासन का महत्व है।
गाँधीजी भागवत गीता को अपने
अध्याय का स्रोत मानते थे। वे उदार
बुद्धिवाले व्यक्ति के पक्षधर थे। मनुष्य
में उदार, अहिंसा, सत्यवादिता,
ब्रह्मचर्य, लोभहीनता जैसे गुण होने
चाहिए।

Scanned with CamScanner